Dr. Sunil Kr. "Suman"
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study Material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date - 30-09-20
Next class

Models of Psychology

Behaviouristic Model

(III) विलोपन (Extinction):— जिस प्रकार किसी प्रबलन (Reinforcement) के बार-बार प्रयुक्त (Repeated use) होने के फलस्वरूप अनुबंधित व्यवहार (conditioned behaviour) बलिष्ठ (Strengthened) होता है अथवा वह बना रहता है (is maintained). प्रबलन को हटा लेने पर (on Removal of Reinforcement) अनुबंधित अनुक्रिया (conditioned Response) क्रमशः लुप्त (gradual extinction or Elimination) होने लगती है। इस नियम से यह स्पष्ट होता है की यदि समायोजित व्यवहार (adaptive behaviour) प्रबलित (Reinforced) नहीं हो तो वह अनायोजित या कुसमायोजित (maladaptive) व्यवहार में समायोजित हो जाएगा, जो प्रबलित होता है अथवा पुरस्कृत होता है। विलोपन का नियम (Principle of Extinction) उपचार की 'व्यवहार' परिमार्जन प्रविधि (behaviour modification technique) के संदर्भ में ज्यादा महत्वपूर्ण है. जिसका प्रयोग कर मनोचिकित्सकों (Psychotherapists) ने व्यवहार परिमार्जन की अनेक प्रविधियाँ विकसित की है। शिक्षण के इस नियम विधि से सम्मत यह संकेत मिलता है कि यदि केवल कुसमायोजित व्यवहार के प्रबलक (Reinforcement) को हटा लिया जाय तो बिना किसी विशेष चिकित्सीय व्यवस्था के कुसमायोजित व्यवहार समायोजित व्यवहार में बदल जाता है।

कुसमायोजित असामान्य व्यवहारों की व्याख्या में शिक्षण के नियमों की प्रमाण पैवलव ने एक कुत्ता पर इसका प्रयोग किया गया एवं उसमें दिखलाया गया कि एक कुत्ता को कार्ड पर बना हुआ वृत दिखलाया गया और बार बार दिखलाने के बाद उसे भी वृत पर ही भोजन दिखाया गया इसके बाद कुत्ता के भोजन टपकने लगा। उसी कुत्ते को प्रशिक्षण दिया गया की वृत की जगह दिर्घ वृत अब दोनों प्रकार की अनुक्रियाएं जब अच्छी तरह स्थापित हो गई इसके बाद कुत्ते मे के व्यवहार मे उतावलापन, असहयोगशीलता (disturbance and uncooperative ness) के लक्षण देखा गया। भोजन को अस्वीकार करना, चीखना एवं पैर पटकने जैसा व्यवहार करने लगा। पावलव ने कुत्ते के व्यवहार मे हुए इस परिवर्तन के शब्दों में किया।

अर्थात अब तक जो कुत्ता शांत था, वह अप्रत्याशित रूप से विक्षुब्ध व्यवहार, जैसे चीत्कार, छटपटाहट, दाँतों को चीरना, आवरण को तोड़ने आदि। प्रयोगशाला में ले जाने पर भी कुत्ता पूर्व से विपरीत आक्रोशमय गर्जन करने लगा। संक्षेप में यह कहा जाय तो कुत्ता के व्यवहार में अतितिव्र स्वरूप के न्यूरोसिस के लक्षण देखे गये।

उपर्युक्त प्रयोग से स्पष्ट है कि अनुक्रिया अनुकूलन (Response conditioning) पशुओं और मनुष्यों - दोनों के व्यवहार को कुसमायोजन की ओर अग्रसर करता है। इसका पहला प्रमाण वाटसन एवं रैनर (Watson and Rayner, 1920) के प्रयोग से मिलता है जिसमें अलबर्ट (Albert) नाम के एक बालक में उजले उजले रंग के रोयेंदार प्रत्येक वस्तु के प्रति भय का विकास प्रदर्शित किया गया था। अलबर्ट ने जब अपनी माँ को उजले रोयेंदार कोट मे रहती थी व देखते वह अपनी माँ से भी डरने लगा था।

Next class